पार्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गिरी तनये दक्षजे

शंभु प्रिये गुणखानि।

गणपति जननी पार्वती

अम्बे शक्ति भवानि॥

॥ चौपाई॥

ब्रह्मा भेद न तुम्हरो पावे,

पंच बदन नित तुमको ध्यावे।

षड्मुख कहि सकत न यश तेरो,

सहसबदन श्रम करत घनेरो।

तेऊ पार न पावत माता,

स्थित रक्षा लय हित सजाता।

अधर प्रवाल सदृश अरुणारे,

अति कमनीय नयन कजरारे।

ललित ललाट विलेपित केशर,

कुंकुंम अक्षत शोभा मनहर।

कनक बसन कंचुकी सजाए,

कटि मेखला दिव्य लहराए।

कंठ मदार हार की शोभा,

जाहि देखि सहजहि मन लोभा।

बालारुण अनन्त छबि धारी,

आभूषण की शोभा प्यारी।

हिन्दीपथ.कॉम

नाना रत्न जटित सिंहासन,

तापर' राजति हरि चतुरानन।

इन्द्रादिक परिवार पूजित,

जग मृग नाग यष रव कूजित।

गिर कैलास निवासिनी जय जय,

कोटिक प्रभा विकासिन जय जय।

त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तिहारी,

अणु अणु महं तुम्हारी उजियारी।

हिन्दीपथ.कॉम

हैं महेश प्राणेश । तुम्हारे ,
त्रिभुवन के जो निज रखवारे।

उनसो पति तुम प्राप्त कीन्ह जब,
सुकृत पुरातन उदित भए तब।

बूढ़ा बैल सवारी जिनकी,
महिमा का गावे कोउ तिनकी।

सदा श्मशान बिहारी शंकर,
आभूषण है भुजंग भयंकर।

हिन्दीपथ.कॉम

कण्ठ हलाहल को छबि छायी,
नीलकण्ठ की पदवी पायीं।

देव मगन के हित अस कीन्हों,
विष लै आपु तिनहि अमि दीन्हों।

ताकी तुम पत्नी छवि धारिणी,
दूरित विदारिणी मंगल कारिणि।

देखि परम सौन्दर्य तिहारो,
त्रिभुवन चकित बनावन हारो।

हिंदीपथ.कॉम

भय भीता सो माता गंगा,

लज्जा मय है सलिल तरंगा।

सौत समान शम्भु पहआयी,

विष्णु पदाब्ज छोड़ि सो धायी।

तेहिकों कमल बदन मुरझायो,

लखि सत्वर शिव शीश चढ़ायो।

नित्यानन्द करी बरदायिनी,

अभय भक्त कर नित अनपायिनी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अखिल पाप त्रयताप निकन्दिनि,
माहेश्वरी हिमालय नन्दिनी।

काशी पुरी सदा मन भायी,
सिद्ध पीठ तेहि आपु बनायी।

भगवती प्रतिदिन भिक्षा दात्री,
कृपा प्रमोद सनेह विधात्री।

रिपुक्षय कारिणि जय जय अम्बे,
वाचा सिद्ध करि अवलम्बे।

हिन्दीपथ.कॉम

गौरी उमा शंकरी काली,

अन्नपूर्णा जग प्रतिपाली।

सब जन की ईश्वरी भगवती,

पतिप्राणा परमेश्वरी सती।

तुमने कठिन तपस्या कीनी,

नारद सों जब शिक्षा लीनी।

अन्न न नीर न वायु अहारा,

अस्थि मात्रतन भयउ तुम्हारा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

पत्र घास को खाद्य न भायउ,
उमा नाम तब तुमने पायउ।

तप बिलोकि रिषि सात पधारे,
लगे डिगावन डिगी न हारे।

तब तव जय जय जय उच्चारेउ,
सप्तरिषी निज गेह सिधारेउ।

सुर विधि विष्णु पास तब आए,
वर देने के वचन सुनाए।

हिन्दीपथ.कॉम

मांगे उमा वर पति तुम तिनसों,

चाहत जग त्रिभुवन निधि जिनसों।

एवमस्तु कहि ते दोऊ गए,

सुफल मनोरथ तुमने लए।

करि विवाह शिव सों हे भामा,

पुनः कहाई हर की बामा।

जो पढ़िहै जन यह चालीसा,

धन जन सुख देइहै तेहि ईसा।

हिंदीपथ.कॉम

॥ दोहा ॥

कूट चंद्रिका सुभग शिर

जयति जयति सुख खानि।

पार्वती निज भक्त हित

रहहु सदा वरदानि॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

हिंदीपथ.कॉम

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com